शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी ब्लॉग लेखन में सम्भावनाएं और चुनौतियाँ

डॉ. निशा सिंह
अनुसन्धात्री
ए.जे.किदवई मास कम्यूनिकेशन रिसर्च सेण्टर
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

सूचना प्रौद्योगिकी ने आज पूरी दुनिया का परिदृश्य बदल दिया है। परम्परागत प्रतिमान एक-एक कर ध्वस्त हो रहे हैं और उसके स्थान पर नयी व्यवस्थाएं बन रही हैं। सूचना क्रांति ने अनेक नए गवाक्ष खोल दिये हैं। पहले जहां सूचनाओं के आदान-प्रदान पर चंद व्यक्तियों का एकाधिकार हुआ करता था, वहीं आज प्रत्येक व्यक्ति यह कार्य कुछ मिनटों में संपन्न कर सकता है। इसने मनुष्य के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। उसके जीवन का सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, सांस्कृतिक पक्ष सूचना क्रांति से अछूता नहीं है। तकनीक के बढ़ते चरण ने मनुष्य को अभिव्यक्ति के अनेक अवसर उपलब्ध कराये हैं, उन्ही में से एक है ब्लॉग लेखन। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी में ब्लॉग लेखन की संभावनाएं और चुनौतियों की चर्चा की गयी है।

भूमिका

आज का युग प्रौद्योगिकी क्रान्ति का युग कहा जाता है। प्रौद्योगिकी के इस युग में परिवर्तन का दौर इतनी तेजी से बढ रहा है कि जो बदलते परिवर्तन में अपने-आप को नहीं ढाल पा रहे हैं वो एक सीमा तक सिमट कर रह गये हैं। यह बदलाव मानव जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्ष के लिए भी असीमित विकल्प पेश कर रहा है। यदि हम विश्व की ओर दृष्टि डालें तो धुव्रीकरण और सर्वोच्चता की दौड में आज सभी जनसंचार माध्यम बहुत तेजी से आगे बढ रहे हैं। जिसके चलते जनसंचार माध्यमों में इलेक्ट्रोनिक माध्यम का एक रूप इंटरनेट भी तेजी से उभर कर लोगों के जीवन में घुसपैठ कर रहा है। डिजिटल क्रान्ति के साथ जुडे लोगों का मानना है कि आने वाले सामाजिक परिवर्तन क्रान्तिकारी होंगे। इस विषय में अमेरिकी संघीय संचार आयोग के अध्यक्ष रीड हंट का कहना है कि हर चीज भिन्न होगी। परिवर्तन इतने चरम कोटि का है कि बहुत सारे लोग इसे बिल्कुल पकड ही नहीं पाये हैं|"1

21वीं सदी में प्रवेश कर चुके नये जन संचार माध्यम तकनीकी रूप से समृद्ध हैं और यह माध्यम कई विधाओं के रूप में आ रहे हैं। ब्लॉग, ट्वीटर, फेसबुक व अन्य सोशल साइट्स इसी श्रेणी में आते हैं। न्यू मीडिया में ब्लॉग को छोडकर उभरी ये सभी विधाएं इन्टरनेट इस्तेमाल करने वालों के लिये मुफ्त अभिव्यक्ति के माध्यम तो थे, लेकिन उनका इस्तेमाल करने के लिये एक स्वतंत्र मंच उपलब्ध नहीं था। ब्लॉग ने व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को सजा-सजाया मंच दिया और इस कदम ने इन्टरनेट पर न्यू मीडिया क्रान्ति के लिये सही मायने में जगह दी। ब्लॉग अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है जहाँ आप अपने विचार रखने और दूसरों के विचारों को जानने के लिये स्वतंत्र है। एक ऐसा मंच जहाँ

न कोई प्रकाशक है, और न कोई संपादक तथा न ही कोई स्पेस (space) की समस्या। आप जब चाहे, जिस वक्त बिना रोक-टोक के अपने लेख को वाद-वोवाद का रूप दे सकते हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मुख्यधारा की पत्रकारिता में संभव नहीं है। एक ऐसा वर्चुअल स्पेस है जहाँ मुख्यधारा की सभी वर्जनाएँ टूटती नजर आती हैं।

भारत में इन्टरनेट

भारत में इन्टरनेट का प्रयोग करने वाली आबादी मात्र 8 प्रतिशत है और इसमें से 3 प्रतिशत लोग ही सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। इसी सोशल मीडिया के तहत ब्लॉग ने कई सार्थक बहसों को जन्म दिया है। सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक, इत्यादि अभियानों को मजबूती प्रदान करने में ब्लॉग की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। हम कह सकते हैं कि न्यू मीडिया के रूप में उभरे ब्लॉग ने जनता तक बहुत-सी ऐसी बातों व विचारों का आदान-प्रदान किया जो मुख्य धारा की पत्रकारिता कम करती है। विचारों को खुला आकाश व निष्पक्ष भाव ही ब्लॉग की दुनियाँ को आगे बढाने का काम कर सकता है, जो ब्लॉग की एक महत्त्वपूर्ण खूबी है।

चुनौतियाँ

हिन्दी फॉन्ट की समस्या

तकनीकी शिक्षा के अन्तर्गत ही एक समस्या हिन्दी टाइपिंग के फॉन्ट की भी है। हिन्दी में लेख आलेख को कम्प्यूटर के माध्यम से लिखना एक आम आदमी जो इन्टरनेट का केवल अतिसामान्य ज्ञान ही रखता हो, उसके लिये मुश्किल-सा ही प्रतीत होता है। वर्तमान में कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग के लिये कोई ऐसा कॉमन फॉन्ट नहीं है जो हिन्दी टाइपिंग में विश्व स्तरीय रूप से सहायक हो, इसके विपरीत अनेक फॉन्ट्स विद्यमान हैं और भिन्न-भिन्न लोग हिन्दी के उन भिन्न फॉन्ट्स में टाइपिंग करते है, जो सभी कम्प्यूटर में विद्यमान नहीं होती और सभी लोग सभी फॉन्ट्स में टाइपिंग नहीं जानते। भिन्न फॉन्ट में टाइप किया हुआ कन्टेन्ट दूसरे कम्प्यूटर में खुलता भी नहीं हैं। यदि उसमें वह विशिष्ट फॉन्ट न हो जिसमें वह टाइप किया गया है। अतः हिन्दी में कोई ऐसा यूनिवर्सल फॉन्ट का अभाव है जो विश्वस्तरीय हो और इस प्रकार की समस्याओं से मुक्त हो, परन्तु इस और तकनीकी रूप से कोशिश जारी है और हिन्दी के मंगल/यूनिकोड ऐसे फॉन्ट हैं जो हिन्दी टाइपिंग को आगे बढ़ाने में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं और सर्वाधिक लोग भी इसका प्रयोग कर रहे हैं। इस फॉन्ट की समस्या के विषय में लेखिका आर. अनिराधा का भी यही कहना है कि "हिन्दी लेखन के लिये अभी तक कोई ऐसा फॉन्ट उपलब्ध नहीं है जो दुनिया भर या भारत के सभी कम्प्यूटर्स पर काम करें (लेपटॉप. टेबलेट, मोबाईल तो बाद की बात है) इस दिशा में हुए प्रयास आधे-अधूरे हैं, जबकी हिन्दी पढने-लिखने वालों की संख्या कहीं ज्यादा है।"

मौजूदा सामग्री की विश्वसनीयता

ब्लॉग एक ऐसा मंच है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति जो ब्लॉग कला की समझ रखता है, लिख सकता है, किसी मुद्दे पर अपनी राय व्यक्त कर सकता है, सूचनाएँ दे सकता है। ब्लॉग पर कुछ गम्भीर लेख और राष्ट्र स्तरीय अथाह सूचनाएँ व जानकारियाँ विद्यमान रहती हैं। साथ ही हम जानते हैं कि ब्लॉग पर कोई सेंसरशिप और सम्पादक जैसी अवधारणा नहीं है, जो उन सूचनाओं व समाचारों को प्रमाणित करे कि वे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सही हैं। ऐसे में ब्लॉग पर विद्यमान सामग्री की प्रमाणिकता एवं विश्वसनीयता पर एक बड़ा प्रश्न उपस्थित होता है। यह ब्लॉग की एक चुनौती है।

आपत्तिजनक एवं अमर्यादित सामग्री का प्रकाशन

न्यू मीडिया के रूप मे ब्लॉग पर लोगों का रुझान बढ़ता जा रहा है और यह धीरे-धीरे लोकप्रिय भी हो रहा है। इस लोकप्रियता के साथ ही इसका दुरूपयोग भी बढ़ता जा रहा है। ब्लॉग पर आपत्तिजनक और अमर्यादित सामग्री का प्रकाशन भी देखने को मिलता है। ब्लॉग पर आपत्तिजनक या अमार्यादित सामग्री का मिलना ब्लॉग के लिये एक चिन्ता का विषय है और यह ब्लॉग की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न भी लगा रही है। इस विषय पर लेखक कनिष्क कश्यप का मानना है कि "छोटे स्तर पर स्वतन्त्र, परन्तु विकास की प्रक्रिया पर स्वतः चलते हुए जैसे ही ऐसी संस्थाएँ व्यापकता हासिल करती हैं बजार और तंत्र उस पर हावी हो जाता है।"2 इसका एक और उदाहरण देखा जा सकता है "हिन्दी में 2008 में जब ब्लॉगिंग तेज हुई, तो आपस में सिर फुटौवल तक की हालत आयी। मौहल्ला और भडास (हिन्दी के जाने माने ब्लॉग) के बीच गालियों का आदान-प्रदान हुआ। बेहद अश्लील ढंग से लिखे गये इन ब्लॉग्स ने हिन्दी ब्लॉगिंग को काफी नुकसान पहुँचाया।"3 ब्लॉग अभिव्यक्ति का खुला एवं स्वतंत्र मंच तो है किन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी अन्य व्यक्ति के अधिकारों का अतिक्रमण न करें यह भी बेहद जरूरी है, इस प्रकार का अभिव्यक्ति का यह अतिक्रमण एक अपराध की श्रेणी में ही आता है। यह ब्लॉग के सामने एक गम्भीर चुनौती है।

इन्टरनेट साक्षरता

भारत एक ग्राम प्रधान देश है, जहाँ की 75 प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है और यहाँ पर 91.5 प्रतिशत ग्रामवासी इन्टरनेट के बारे में जानते तक नहीं। "आई.ए.एम.ए.आई.(Internet And Mobile Association Of India) की 2011 की रिपोर्ट के मुताबिक शहरों एवं गावों में मिलाकर कुल 18 प्रतिशत लोग ही कम्प्यूटर का इस्तेमाल करना जानते हैं। यहाँ 10 प्रतिशत लोग भी इन्टरनेट व कम्प्यूटर का खर्च नहीं उठा सकते। गांवों में लोगों की 70 प्रतिशत से ज्यादा इन्टरनेट की जरूरत साइबर केफे में ही पूरी होती है।"4 ये आंकड़े बताते हैं कि उपभोक्ता की पहुँच इन्टरनेट तक नहीं हुई क्योंकि वह आर्थिक रूप से प्रथमतः सक्षम नहीं है और द्वितीय यह है कि तकनीकी शिक्षा उस तक नहीं पहुँच पायी है। अतः ब्लॉग की पहुँच अभी बहुत सीमित है जिसके कारण कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। इसका समाधान शिक्षा और विशेष रूप तकनीकी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से ही किया जा सकता है। आई.ए.एम.ए.आई.(Internet And Mobile Association Of India) की 2014 की रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि यह आंकड़ा अब ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों में बहुत तीव्र गति से बढ़ रहा है।"5

इन्टरनेट, कम्प्यूटर, लेपटॉप का सामान्य जन की पहुँच से बाहर होना

भारत एक विकासशील राष्ट्र है और सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, गरीबी, बेरोजगारी जैसे अनेक समस्याओं से झूझ रहा है। इन सभी समस्याओं में गरीबी और बेरोजगारी ऐसी समस्याएँ हैं, जिनका सामना भारत की लगभग आधी आबादी को व्यक्तिगत जीवन में

रोज करना पड़ता है। ऐसे में उनके पास इन्टरनेट, कम्प्यूटर व लेपटॉप की उपलब्धता एक मुश्किल चुनौती है।

भाषायी कौशल

ज्यादातर ब्लॉगर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में भाषायी संस्कार बहुत कमजोर प्रतीत होते हैं। हिन्दी ब्लॉगिंग में भाषा की अशुद्धता भी देखने को मिलती है जो कहीं न कहीं हिन्दी ब्लॉगिंग के लेख-आलेख को स्तरीय व परिपूर्ण बनाने में बहुत बड़ी बाधा के रूप में है। भाषा की त्रुटियाँ एक पाठक को उसके सम्यग् ज्ञान से वंचित करती है जो कि किसी भी जनसंचार माध्यम के लिये सकारात्मक तथ्य नहीं है। इस भाषा के कमजोर संस्कार से ब्लॉग का स्वाद कड़वा बन जाता है। केवल तथ्यों का खुलासा करना ही ही ब्लॉगिंग की सफलता के लिये जरूरी नहीं है, अपितु भाषायी चमत्कार भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है एवं आवश्यक है। भाषायी चमत्कार भी कई बार रचना को पढ़ने को पाठक को मजबूर करता है। कभी-कभी किसी पोस्ट को ज्यादा पाठकीयता हासिल हो पाती है तो इसका एक बढ़ा कारण भाषायी कौशल भी है। इसी प्रकार की भाषायी कौशल की चर्चा उमेश चतुर्वेदी अपने एक लेख में भी करते है।"6

ब्लॉग पत्रकारिता या वैकल्पिक मीडिया के रूप में एक चुनौती

'इन्टरनेट एण्ड मोबाईल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की एक रपट (2009) के अनुसार देश के गावों की कुल साक्षर आबादी में केवल 17 फीसदी ही अंग्रेजी जानती है। जबकी शहरी साक्षरों में 37 फीसदी अंग्रेजी जानते हैं। शेष अर्थात शहरों की 63 फीसदी और गांवों की 83 फीसदी साक्षर आबादी हिन्दी और अन्य मातृ भारतीय भाषाएँ जानती है अंग्रेजी नहीं।"7 इस रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि इन्टरनेट की पहुँच अभी तक बहुत कम लोगों के बीच ही है। ऐसे में ब्लॉग पाठकों एवं ब्लॉग पर लेखन की संख्या तेजी से नहीं बढ़ सकती है। हिन्दी ब्लॉगिंग की बात करें तो यह तथ्य सामने आता है कि सूचना संचार प्रोद्योगिकी में ब्लॉग ने एक स्वतंत्र मंच बनाया है। निःसन्देह ब्लॉग लेखन ने जनतन्त्र को सशक्त करते हुए एक आम आदमी को अपने विचार कहने, सुनने व बोलने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी है परन्तु यह स्वतन्त्रता कहीं स्वछन्दता में न बदल जाये इस विषय पर भी ब्लॉग में ध्यान देने की आवश्यकता है। मुख्य धारा की पत्रकारिता में किसी भी खबर या लेख-आलेख को छापने से पहले उनका सत्यापन किया जाता है। क्या ऐसे ही ब्लॉग में जो सूचनाएँ त्वरित प्रकाशन में आती हैं उनका सत्यापन किया जाता है या नहीं इस विषय में लेखक पृथ्वी परिहार का मत है कि "ऑनलाइन पत्रकारिता में संपादक नाम की अवधारणा ही नहीं है। आपने ही लिखा आपने ही छाप दिया ब्लॉग या वेबसाइट पर डॉक्यूमेंट के रूप में। अब उस पर टिप्पणियाँ और सुझाव आते रहेगें। तो पत्रकारिता का एक बुनियादी तत्त्व 'ट्रस्ट बट वेरिफाई' (Trust but verify) यानि सत्यापन के बाद वाला जो नियम था, वह चला गया। यह अच्छा संकेत नहीं है क्योंकि आजादी के साथ जवाबदेही भी आती है, जिम्मेदारी भी तय होती है। समाचार सूचनाओं आलेखों से पहले उनकी जाँच परख की जो विधि थी, वह गायब हो गयी। हुआ यह कि सूचनाओं के नाम पर कचरा भी आने लगा व गंभीरता गायब हो गयी।"8

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि इसके पक्ष एवं विपक्ष दोनों के अपने-अपने तर्क हैं। ब्लॉगिंग को पत्रकारिता का एक रूप मानना अभी एक चुनौती ही है। यह अभी भी वाद-विवाद का विषय है। अतः वर्तमान में ब्लॉग को पत्रकारिता तथा ब्लॉगर को पत्रकार माना जाये या नहीं भी, एक बडी समस्या है जो ब्लॉग के विस्तार के लिये एक बडी चुनौती बनी हुई है।

भविष्य में संभावनाएँ

ब्लॉग की चुनौतियों एवं कमजोरियों पर बात करने के बाद हम इस बिन्दु को समझ सकते हैं कि आगे ब्लॉग की क्या संभावनाएँ हैं। अगर वर्तमान हिन्दी ब्लॉग की इन कमजोरियों एवं चुनौतियों को दूर करने के कदम उठाये जाये तो आगामी समय में हिन्दी ब्लॉग के उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ और अधिक बलवती हो सकती हैं। अर्थात हिन्दी ब्लॉग की आगामी भविष्य में संभावनाएँ इसकी वर्तमान में विद्यमान कमियों या चुनौतियों के समाधान पर भी निर्भर करती हैं। अतः यहाँ हिन्दी ब्लॉग में विद्यमान भाषायी कौशल की न्यूनता, अमर्यादित भाषा का प्रयोग, ऐसी समस्याएँ है जिनका संबंध ब्लॉग से ज्यादा ब्लॉग जुड़े लोगों से है, जो इस पर दिन-प्रतिदिन लिखते हैं। यह सामान्यतः देखा जाता है कि जब कोई इस प्रकार की नयी विधा आती है तो वहाँ परिपक्वता का अभाव देखा जाता है। और जैसे-जैसे परिपक्व मानसिकता के लोग इससे जुड़ते जाते हैं। इस परिपक्व मानसिकता और लेखन का प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता जाता है। और अन्य लोग भी हिन्दी ब्लॉग लेखन में भाषा का स्तर सुधारने की कोशिश करते हैं अतः यहाँ हिन्दी ब्लॉग की ये तत् संबंधी समस्यायें शीघ्र ही कम होने की संभावना व्यक्त की जा सकती है। और हिन्दी ब्लॉग में इन समस्याओं में पहले की अपेक्षा सुधार भी देखा जा सकता है। इन्टरनेट की समुचित सुविधा का अभाव, कम्प्यूटर, लेपटॉप इत्यादि जरूरी संसाधनों का महंगा होना, फॉन्ट की समस्या, इन्टरनेट की शिक्षा का अभाव आदि हिन्दी ब्लॉग की समस्यायें ऐसी समस्यायें है जिनको भारत जैसे विकासशील देश में एक शासकीय नीति द्वारा ठीक करने की आवश्यकता है। अतः इस संबंध में भी भारत की शिक्षा नीति में तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। राजनीतिक पार्टियाँ अपने चुनाव घोषणाओं में भी तकनीकी शिक्षा और फ्री इन्टरनेट की सुविधा देने के वादे कर रही है और सरकार की इस हेतु सकारात्मक कोशिशें करती नजर आ रही है। अतः इन समस्याओं का समाधान भी होने की संभावना की जा सकती है।

अतः उपर्युक्त इन तथ्यों को संज्ञान में रखते हुए हिन्दी ब्लॉग की भविष्य में निम्नलिखित संभावनाएँ व्यक्त की जा सकती है-

1 भारत एक ग्राम प्रधान देश है। यहाँ अभी तकनीकी रूप से साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत बहुत कम है। शहरी बच्चों को छोड़ दिया जाये तो कहा जा सकता है कि गावों के बच्चों की तकनीकी शिक्षा नगण्य सी है। केन्द्रीय और राज्य सरकारों को इस इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है। तकनीकी शिक्षा का जैसे-जैसे प्रसार होगा वैसे-वैसे ही लोग आधिनिक संचार माध्यमों से जुड़ने लगेंगे। साथ ही कम्प्यूटर, लेपटॉप, इन्टरनेट पर काम करने में स्वभाविक रुचि बढेगी जो न्यू मीडिया के साधन हैं। जैसा कि इनटरनेट एण्ड मॉबाइल एशोशियेसन ऑफ इण्डिया की 2009-2014 तक रिपोर्ट पर ध्यान दे तो वहाँ प्रतिवर्ष ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में

उपभोक्ताओं की संख्या में तीव्र गति के संकेत मिलते हैं। अतः इस प्रकार जैसे जैसे तकनीकी शिक्षा बढेगी हिन्दी ब्लॉग, ब्लॉगर एवं इससे जुड़ने वाले लोगों की संख्या में अवश्य वृद्धि होगी ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

2 हिन्दी ब्लॉग के विकास के लिये विद्वानों को चाहिये कि लोगों के लिये सहज भाषायी कौशल का प्रसार करें। इसके लिये एक ऐसे सामान्य फॉन्ट का विकास एवं प्रसार जरूरी है जो सभी कम्प्यूटर्स, लेपटॉप, मोबाइल आदि में उपलब्ध रहे और आसानी से कार्य करे। या ऐसा कोई फॉन्ट या सॉफ्टवेयर विकसित करें जिसमें किसी भी फॉन्ट में लिखी सामग्री आसानी से उसके यथावत रूप में खुल जाये। हिन्दी ब्लॉग के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये सर्वप्रथम हिन्दी टाइपिंग, हिन्दी फॉन्ट, कमेंट को मोडरेट करने, सुविधानुसार उसे रंगरूप देने, ब्लॉग का ले-आउट और साज-सज्जा करना, पोस्ट को किसी आगामी तारीख हेतु शेड्यूल करना, अंग्रेजी में टाइपिंग करते हुए देवनागरी लिपि में रूपान्तरण करना जैसी तमाम जानकारियाँ अति आवश्यक है। यूनिकॉड ने बहुत हद तक हिन्दी टाइपिंग की समस्या को हल कर दिया है। शुरूआती दिनों में यूनिकॉड टाइपिंग के लिये मात्र फॉनेटिक व इनस्क्रिप्ट की सुविधा थी। जल्द ही हर तरह के की-बोर्ड यूनिकोड की टाइपिंग के लिये उपलब्ध हो गये। साथ ही गूगल ने भी पुराने हिन्दी फॉन्ट्स तथा श्री-लिपि व कृतिदेव इत्यादि में तैयार सामग्री को यूनिकोड हिन्दी में रूपान्तर करने के लिये कन्वर्टर तैयार किये। इसने हिन्दी ब्लॉगिंग को एक नया विकल्प प्रदान किया। इस प्रकार हिन्दी ब्लॉग की तकनीकी समस्याओं का जैसे-जैसे समाधान होता जायेगा, हिन्दी ब्लॉग लिखने वालों, लेखकों, साहित्यकारों आदि लोगों के लिये एक वरदान साबित होगा। ऐसे में हिन्दी ब्लॉग की भविष्य में अपार संभावनाएँ प्रतीत होती हैं।

3 ब्लॉगर विद्वानों को ब्लॉग के भविष्य की अपार संभावनाओं को प्राप्त करना है तो उनको ब्लॉग पर पोस्ट होने वाली सामग्री की प्रमाणिकता पर ध्यान देना अति आवश्यक है। चूँकि वर्तमान युग में लोगों के पास सूचनाएँ प्राप्त करने के अनेक माध्यम विद्यमान हैं ऐसे में ब्लॉग पर असत्य या अप्रमाणित तथ्यों का पोस्ट करना ब्लॉगिंग के लिये आत्मघाती खतरा साबित हो सकता है। क्योंकि यह माध्यम अभी मीडिया के क्षेत्र में अपने पैर जमा रहा है। ब्लॉगर्स को चाहिये कि ब्लॉग पर मीडिया के अन्य माध्यमों से पहले अलग, नवीन, गम्भीर एवं प्रमाणिक घटनाओं, लेखों को पोस्ट करें। उस नवीन व प्रमाणित सामग्री को प्राप्त कर पाठक वर्ग अन्य माध्यमों की बजाय ब्लॉग की ओर आकर्षित होंगे जो ब्लॉग के भविष्य के लिये अपार संभावनाओं के द्वार खोल सकता है।

4 इतिहास हो या साहित्य सभी जगह कुछ लोगों का वर्चस्व रहा है और बहुसंख्यक लोगों को हाशिये पर रखा गया। जहाँ भी इन लोगों को जगह मिली वो वर्चस्वशाली लोगों की श्रेष्ठता बोध के सन्दर्भ में। मीडिया के आने के बाद भी हाशिये के लोगों के साथ वही बर्ताव बरता गया। हाशिये के लोगों की अभिव्यक्ति को और उनकी समस्याओं को सम्पूर्णता के साथ मीडिया में भी जगह नहीं दी गयी। ऐसे लोगों की आवश्यकताओं नकारा गया। ऐसे में न्यू मीडिया के माध्यमों के आने से उनको अपनी बात रखने को जगह मिली है। फेसबुक ने ने सभी लोगों को समान मंच उपलब्ध कराया। हाशिये के लोगों द्वारा अपनी समस्याओं या अन्य घटनाओं पर लेखन को

मुख्यधारा के मीडिया में स्थान नहीं मिला तो हिन्दी ब्लॉग ने उनको अभिव्यक्ति का मौका दिया। अतः दलित, आदिवासी व स्त्री आदि वर्गों के लोगों अभी मीडिया में उपेक्षित ही नजर आते हैं ऐसे में हिन्दी ब्लॉग इस की आवाज बनने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में उभर सकता है। इसकी प्रबल संभावनाएँ प्रतीत होती हैं। ब्लॉगर विद्वानों को ब्लॉग की सभी खामियों को दूर करके मुख्यधारा के मीडिया से अधिक अपडेट करना होगा, तभी जाकर ब्लॉग एक वैकल्पिक मीडिया जैसा स्वरूप ले सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 भूमण्डलीय माध्यम (निगम पूँजीवाद के नए प्रचारक), एडवर्ड एस हरमन व रॉबर्ट डब्ल्यू मैकचेस्नी, अनुवादक- चन्द्रभूषण, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली, प्रथम हिन्दी संस्करण, 2006, पृष्ठ संख्या 173.

2 न्यू मीडिया:संभावनाएँ और चुनौतियाँ(लेख), कनिष्क कश्यप(लेखक), हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रान्ति (संपा.) अविनाश वाचस्पति व रवीन्द्र प्रभात, हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 169.

3 हिन्दी ब्लॉगिण्ग की चुनौतियाँ, (लेख) उमेश चतुर्वेदी (लेखक) पृष्ठ संख्या 227. हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रान्ति (संपा.) अविनाश वाचस्पति व रवीन्द्र प्रभात, हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, प्रथम संस्करण 2011

4 IAMAI Annual Report, 2010-11.

5 IAMAI Annual Report, 2013-14.

6 हिन्दी ब्लॉगिंग की चुनौतियाँ(लेख), उमेश चतुर्वेदी, हिन्दी ब्लॉगिंग: अभिव्यक्ति की नई क्रान्ति (संपा.) अविनाश वाचस्पति व रवीन्द्र प्रभात, हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, प्रथम संस्करण 2011

7 न्यू मीडिया, इन्टरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और संभावनाएँ, संपा. आर. अनुराधा, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ संख्या 21., IAMAI Annual Report, 2009.

8 न्यू मीडिया, इन्टरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और संभावनाएँ, संपा. आर. अनुराधा, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012. पृष्ट सं., 37.